इस परियोजना में
आप सबका हृदयस्पर्शी
स्वागत

तृतीय भाषा- हिंदी
दसवीं कक्षा

मेरे प्यारे दोस्त

मैं हूँ आपका दुलारा

जि.आर.एस

दसवीं कक्षा

हिंदी कविता

प्रभो

श्री जयशंकर प्रसाद जी

कवि परिचय

जन्म : 30-01-1889

जन्मस्थान : काशी

पिता : देवी प्रसाद

प्रमुख रचनाएँ : कानन कुसुम, कामायनी,झरना, आँसू, आकाशदीप आदि।

देहांत : 14-09-1937

इन्होने हिंदी के अलावा संस्कृत,अंग्रेजी,उर्दू,तथा पारसी भाषा के ज्ञाता थे।

कविता का सार

- इस कविता में प्रसाद्जी ने सर्वशक्तिमान भगवान का महत्ता और कृपा को सुंदर ढंग से चित्रित किया है।
- भगवान सर्वव्यापी है। उसकी कृपा से हमारी पूरी कामनाएँ तथा अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।
- चाँद, चाँदनी, सागर और सूरज के द्वारा प्रभु की महत्त का वर्णन किया है। भगवान दया सागर है।
- यहाँ प्रकृति का भी सुंदर वर्णन किया गया है।

प्रभो !

विमल इन्दू की विशाल किरणें
प्रकाश तेरा बता रही हैं
अनादि तेरी अनन्त माया
जगत को लीला दिख रही है !

प्रसार तेरी दया का कितना
देखने हो तो देखे सगर
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे
तरंग मालाएँ गा रही हैं !

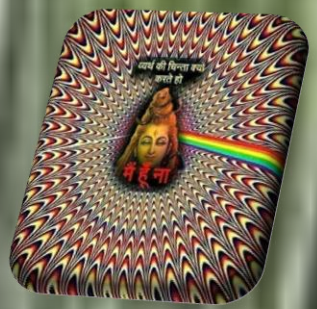

प्रभो !
जो तेरी होवे दया दयानिधि
तो पूर्ण होते सबके मनोरथ
सभी ये कहते पुकार करके
यही तो आशा दिला रही है !

When was the first resolve made to fight for freedom (*Swa-Dharma* & *Swa-Rajya*) ?

Please visit us at - HinduAwakening.org

प्रसाद जी की प्रमुख कृतियाँ

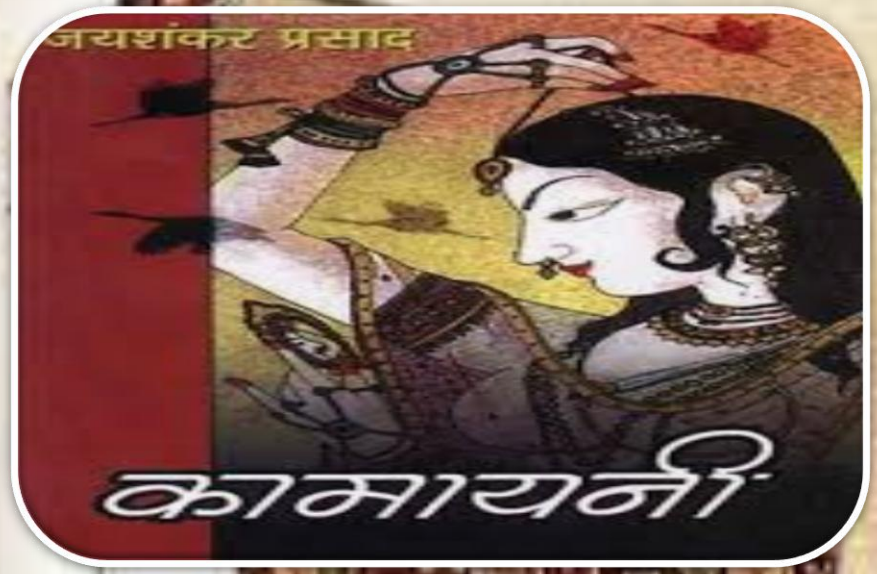

हिम गिरि के उत्तंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह!

नीचे जल था, ऊपर हिम था,
एक तरल था, एक सघन;
एक तत्व की ही प्रधानता,
कहो उसे जड़ या चेतन।

दूर दूर तक विस्तृत था हिम
स्तब्ध उसी के हृदय समान;
नीरवता सी शिला चरण से
टकराता फिरता पवमान।

तरुण तपस्वी–सा वह बैठा,
साधन करता सुर श्मशान;
नीचे प्रलय सिंधु लहरों का,
होना था सकरुण अवसान।

चिंता–कातर वदन हो रहा
पौरुष जिसमे ओत प्रोत;
उधर उपेक्षामय यौवन का
बहता भीतर मधुमय सोत।

उसी तपस्वी से लम्बे, थे
देवदारु दो चार खड़े;
हुए हिम धवल, जैसे पत्थर
बन कर ठिठुरे रहे अड़े।

बंधी महा–बट से नौका थी
सूखे में अब पड़ी रही;
उतर चला था वह जल–प्लावन,
और निकलने लगी मही।

अवयव की दृढ़ मांस–पेशियां,
ऊर्जस्वित था वीर्य्य अपार;
स्फीत शिराएं, स्वस्थ रक्त का
होता था जिनमें संचार।

निकल रही थी मर्म वेदना,
करुणा विकल कहानी सी;
वहां अकेली प्रकृति सुन रही,
हंसती सी पहचानी सी।

प्रसादजी की अन्य कविताएँ

प्रयाणगीत

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती -
स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती -
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ हैं - बढ़े चलो बढ़े चलो।

असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी।
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी।
अराति सैन्य सिंधु में - सुबाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो बढ़े चलो।

- जयशंकर प्रसा

बीती विभावरी जाग री!

बीती विभावरी जाग री!
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई
मधु मुकुल नवल रस गागरी।
अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री।

- जयशंकर प्रसा

पर्यायवाची शब्द:

सूरज

दिनकर

भानु

भास्कर

रवि

पर्यायवाची शब्द

इंदु

शशि

सुधाकर

हिमांशु

सोम

रजनी

- GRS 9480310454

विलोम शब्द लिखिए।

आशा X निराशा

आदि X अंत

मानव X दानव

प्रकाश X अंधकार

- GRS 9480310454

भाषाभ्यास : अन्य वचन रूप लिखिए

लहर	**लहरें**
• दीवार	**दीवारें**
• किताब	**किताबें**
• रचना	**रचनाएँ**

निम्न लिखित प्रश्नों का सही उत्तर लिखिए।

- प्रसाद जी की प्रमुख रचना कौन सी है?
- दयानिधि कौन है?
- हमारी मनोरथ किससे पूर्ण होते हैं ?
- भगवान इसका पर्यायवाची शब्द लिखिए।

धन्यवाद

गोविंदराजशेट्टि हेच.वि

हिंदी शिक्षक पावगड

प्रस्तुति :-
गोविंद राज शेट्टी हेच.वी
सरकारी हाईस्कूल,
दोड्डहल्ली-574121
पावगड़ तहसिल
तुमकूर जिला
9480310454